ISSN 2278-8808 SJIF 2014 = 4.889
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

गजुभाई के शै क्षक वचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता

लक्ष्मी शंकर यादव
शोधार्थी, उ0 प्र0 रा0 ट0 मुक्त वश्व वद्यालय, इलाहाबाद

Abstract

भारत में शशु शक्षा पर सर्वा धक उल्लेखनीय कार्य गजुभाई ने कया। 15 दिसम्बर 1885 को गुजरात के सौराष्ट्र जिले में चत्तल गाँव में जन्में गजुभाई अर्थात् गरिजा शंकर भगवान जी बधेका पेशे से एक वकील थे, कन्तु वकालत छोड़कर शक्षा व्यवसाय को उन्होंने अपनी साधना चुना। अपने कर्मठ व्यक्तित्व से उन्होंने शक्षा, शाला, वद्यार्थी तथा शक्षक के संदर्भ में नवाचारी रूप को प्रकट कया। भारत की स्वतंत्रता का संग्राम उन्होंने प्राथ मक शाला की कक्षा से शुरू कया। उन बालक,बालकों से जो उनके बाल देवता था और जिनके आनंद की शक्षा ही सचमुच मुक्ति की शक्षा थी। उन्होंने स्कूल के तत्कालीन रूपक को उन सभी जड़ता और गतिहीनता से मुक्त कया। प्राथ मक शाला में आनंद की नयी वर्णमाला रची, बाल गौरव की नई प्रणाली रची। शक्षा का नया इतिहास रचा,नया बाल मनो वज्ञान रचा और शै क्षक नवाचारों की वह दिशा एवं दृष्टि रची जो आज भी प्रासं गक एवं सार्थक हैं। प्रस्तुत हैं यहाँ पर उनके शै क्षक वचार-

गजुभाई के अनुसार शक्षा-

गजुभाई प्रच लत शक्षा के वरोधी थे। उन्होंने शक्षा की एक नई परिभाषा रची जिसमें सैद्धान्तिकता के बजाय व्यावहारिकता का पुट अ धक था। अपनी पुस्तक-*दिवास्वप्न* में शक्षा सम्बन्धी वचार व्यक्त करते हुए गजुभाई ने कहा क- वास्त वक शक्षा वहीं है जो मनुष्य का सर्वांगीण वकास करे तथा अध्यात्मिक दृष्टि प्रदान करें...1।

शक्षा के उद्देश्य-

गजुभाई शक्षा को सर्वांगीण वकास एवं आध्यात्मिक वकास का साधन मानते थे। इस लए उन्होंने शक्षा के निम्नां कत उद्देश्य निर्धारित कया है-

गजुभाई-ऐसे हों शक्षक पृ.सं-14

शारीरिक वकास का उद्देश्य।

मान सक वकास का उद्देश्य।

नैतिक वकास का उद्देश्य।

चारित्रिक वकास का उद्देश्य।

आध्यात्मिक वकास का उद्देश्य।

व्यावसायिक वकास का उद्देश्य।

पाठ्यचर्याः-

पाठ्यचर्या के संबंध में गजुभाई ने अपनी पुस्तक मान्टेसरी पद्धति भाग-1 में बाल केन्द्रित शक्षा के संदर्भ में जो नहीं होता वह यह है-

निर्देश या आदेश नहीं होते।

शक्षक का हस्तक्षेप नहीं होता।

पाठ्यक्रम,पाट्यपुस्तकों व गृहकार्य का बोध नहीं होता।

परीक्षा नहीं होती...1।

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में यह कहा जा सकता है क उन्होंने कसी निर्धारित पाठ्यक्रम की रचना नहीं की अ पतु शै क्षक उद्देश्यों को दृष्टिगत करते हुए पाठ्यक्रम में निम्न तथ्यों का समावेश कया जा सकता है। शारीरिक वकास व इन्द्रिय प्र शक्षण के लए व भन्न तरह के खेल व प्रकीर्ण कसरतें...2। यथा- चलना सीखना, गीत गाना, गेंद खेलना, शै क्षक खेल एवं श्वासोच्छवास की कसरतें। इन्द्रिय प्र शक्षण के लए चत्रकला, वाचन शक्षा, लेखन शक्षण का समावेश कया। बौ द्धक वकास के लए ग णत की शक्षा तथा पर्यावरण एवं आस-पड़ोस की जानकारी के लए भूगोल की शक्षा को स्थान दिया है। कथा-कहानी शास्त्र के माध्यम से गजुभाई शशुओं के अन्दर नैतिक व आध्यात्मिक वकास करना चाहते थे। इस प्रकार उनकी पाठ्यचर्या को निम्न बिंदुओं के अन्तर्गत उल्लेखबद्ध कया जा सकता है। इन्द्रिय शक्षण का प्रबंध, लेखन वाचन के साधनों की योजना, ग णत, संगीत चत्रकला और बागवानी आदि....3।

1. रमेश दवे- गजुभाई के शै क्षक वचार एवं प्रयोग। पृ.सं.-47
2. गजुभाई- मांटेसरी पद्धति भाग-2 पृ.सं.-31
3. गजुभाई- मांटेसरी पद्धति भाग-2 पृ.सं.-126-13

शक्षकः-

गजुभाई शक्षक को शक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। उनका मानना है क शक्षक को आत्मानुशा सत होकर आकर्षक व्यक्तित्व से छात्रों को सीखने के लए प्रेरित करना चाहिए। अपनी पुस्तक ऐसे हो शक्षक में गजुभाई शक्षक को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करते हुए कहते हैं क बालकों को श क्षत करने का काम शक्षकों के हाथ हैं। उनका भ वष्य हमारे हवाले है। उनमें हम जो बोयेंगे, वहीं उगेगा, जो कुछ सींचेंगे वहीं फलेगा...1। शक्षकों के लए चार धर्म- सेवा धर्म, छात्र धर्म,ब्राह्मण धर्म व बैश्य धर्म निर्धारित करते हुए गजुभाई ने कल्पित मास्टर लक्ष्मी शंकर को एक माली के रूप में बताया। अपनी पुस्तक- ऐसे हो शक्षक के अध्याय-12 बाल मंदिर

के शक्षकों में उन्होंने लखा है क- पर हमारा काम माली जैसा है ले कन महज माली जैसा ही नहीं। हमें पता है क बीज के अनुरूप ही वृक्ष तैयार होगा पर बीज के दोषों को दूर करना हमारा ही काम है। हमें बीज को सर्फ अनुकूलता ही प्रदान नहीं करनी, अ पतु सामाजिक और नैतिक वातावरण में उसे जीने योग्य भी बनाना है,इस लए हम दृष्टा और प्रेरक हैं...3।

शक्षार्थीः-

गजुभाई अपनी शक्षा में शक्षार्थी को केंन्द्रीय स्थान प्रदान करते हैं। शक्षार्थी ही उनकी साधना का केंद्र बिन्दु था जिसके लए उन्होंने अपना सारा जीवन दान कर दिया। दो वर्ष से छः वर्ष की अवस्था के वे सभी बालकों की सच्ची स्वतंत्रता के बीज तो गजुभाई ने रो पत कया था और जिनके आनंद की शक्षा ही सचमुच मुक्ति की शक्षा थी। उनका मानना था क बच्चों को उनके रू च के अनुरूप कार्य करने दिया जाय, खलौनों के साथ खेलने एवं तोड़-फोड़ करने दिया जाए। बच्ची-बच्चे स्वतंत्र हों, निर्भय हों,खुश हों और दुखी एवं व्यर्थ के तनावों से मुक्त हों तो वे सच्चे दिल से अपना काम स्वंय करेंगे। सही परिणाम पर प्रसन्न होंगे दूसरों को बताएंगे और गलत को सही करने के लए फर प्रयास करेंगे या अपने आप सहयोग लेंगे।

1. गजुभाई- ऐसे हो शक्षक,अपने व्यवसाय को वक सत करें। पृ.सं-68
2. गजुभाई- ऐसे हो शक्षक, शक्षक एक जाति। पृ.सं-24-28
3. गजुभाई- ऐसे हो शक्षक,बाल मंदिर के शक्षकों से। पृ.सं-68

शक्षालयः-

गजुभाई बालमन के अनुसार शाला और उसका वातावरण तैयार करना चाहते हैं। वे स्कूल को बच्चों की क्रीड़ास्थली और आनंदशाला मानते थे। वे चाहते थे बच्चों की स्वतंत्रता, उनकी मुक्ति, उनका आनंद और उस आनंद से अपना ऐसा शक्षाशास्त्र जिसमें खेलना,सीखना और सखाना अलग-अलग न हो। इस लए उन्होंने एक ऐसे शक्षालय की कल्पना की जो-

बच्ची-बच्चों को आमंत्रित करे, न भागे, आने के लए ललचाएँ,आक र्षत करें।

बच्चे स्कूल में आ जाएं तो ठहरे,जाने का नाम न लें।

बच्चे जो सीखे अपनी मर्जी से सीखे, मन से सीखे, बिना भय,भ्रम और ऊब के सीखे।

बच्चे जो सीखे वह परीक्षा के लए न होकर जीवन के लए हो, आनंद के लए हो,आत्म वश्वास और आत्मगौरव के लए हो।

गजुभाई अपने कल्पित मास्टर लक्ष्मी शंकर के माध्यम से शाला का आनंददायी एवं स्वच्छ वातावरण तैयार कर उन्हें स्वच्छन्द भाव से प्रयास एवं त्रुटि द्वारा स्वंय सीखने का अवसर देना चाहते थे। वे एक ऐसी शाला बनाना चाहते थे जहाँ-

घण्टी की डर न हो।

प्रवेश का डर न हो।

शक्षक का डर न हो।
व्यवस्था का डर न हो।
पढ़ाई का डर न हो।
परीक्षा का डर न हो।
गजुभाई- दिवास्वप्न पृ.सं-15-35
कल्पित मास्टर लक्ष्मी शंकर गेट पर खड़े होकर कह रहे हैं-
आओ बिमला बेन- नमस्ते बिमला बेन।
फेर आवजो अर्थात् फर से आना मोहन भाई, सरला बेन, सलमा बेन,करीम भाई आदि...1।
इन सबके साथ-साथ गजुभाई वद्यालय के वातावरण को साफ-सुथरा,स्वच्छ एवं शांत वातावरण में स्था पत करना चाहते थे।
शक्षण व धः-
शक्षण व ध पर वचार करते हुए गजुभाई ने कहा क शक्षण कार्यक्रम में सबसे अहम बात यह है क वद्यार्थी ने स्वेच्छा से, प्रसन्नतापूर्वक कतना सीखा?वे सीखाने की परम्परागत पद्धति के वपरीत थे। उनका कहना था क परम्परागत पद्धति बालकों में सृजनात्मक चंतन,कल्पनाशक्ति एवं आलोचनात्मक पद्धति का वकास नहीं करती। अपने शै क्षक प्रयोगों के दौरान उन्होंने कई शक्षण व धयों का आ वष्कार कया,सो निम्नवत् हैं-
1-व्याख्यान पद्धति, 2-प्रश्नोत्तर पद्धति, 3-जोड़ीदार पद्धति, 4-पाठ्य प्रयोग पद्धति, 5-संयोगीकरण और पृथक्करण पद्धतियाँ, 6- सद्धांत मूलक और दृष्टांत मूलक पद्धति, 7-त्रिपद पद्धति, 8-प्रत्यक्ष पद्धति, 9-दर्शन पद्धति, 10-योजना पद्धति, 11- कण्डरगार्डन पद्धति, 12-स्वंय शक्षण पद्धति, 13-उन्मेष पद्धति, 14-कालक्रमानुसारी पद्धति, 15-व्युत्क्रम पद्धति, 16-पुस्तकालय पद्धति, 17-मुखपाठ पद्धति, 18-बैन पद्धति, 19-श्रवण पद्धति, 20-कथा पद्धति, 21-चल चत्र पद्धति,22-उस्ताद पद्धति आदि...2।
1-रमेश दबे- गजुभाई बधेका के शै क्षक वचार एवं प्रयोग पृ.सं-21
2- गजुभाई- प्राथ मक शाला में शक्षण पद्धतियाँ पृ.सं-19-80
अनुशासनः-
अनुशासन के संदर्भ में गजुभाई का बड़ा स्पष्ट मत है क बच्चों के ऊपर कोई बाह्य अनुशासन न लगाया जाए,उन्हें छेड़ा न जाय। उन्हें उन्मुक्त होकर प्रयोग करने दिया जाए तथा स्वेच्छानुसार सीखने दिया जाए। आत्मानुशासन पर बल देते हुए उन्होंने कहा क बच्चे स्वंय अनुभव के द्वारा अनुशा सत होना सीख जायेंगे। गजुभाई बच्चों के ऊपर कसी बाह्य अनुशासन का निषेध करते हैं तथा ऐसे हों शक्षक में उनका मत इस प्रकार है- बालक को मार-पीट हर गज न की जाए,न ही उसे डांटा या धमकाया जाए। वैसा करेगा तो अमुक चीज नहीं दी जायेगी या यूँ

हो जायेगा। ऐसे बचन कहना भी एक तरह से बालक को सजा देना ही है। उसकी इच्छा के वरूद्ध टोकना, उसका हाथ पकड़कर बिठाना. जोर से उसको दबाना, उसे उठाकर गराना या जबर्दस्ती धक्का देना, ये सब सजा देने के तौर-तरीके ही हैं। आँखे दिखाना, भौहें चढ़ाकर देखना, नाक पर उंगली रखकर चुप करना, जोर का सीत्कार करना,रौबीली आवाज में गुर्राना आदि भी सजा की ही पद्धतियाँ हैं। बाल मंदिर के बालक ऐसे ही प्रकार की सजाओं से मुक्त रखे जाने चाहिए...1। इस प्रकार गजुभाई अनुशासन के संदर्भ में स्वच्छन्दता,स्वाधीनता तथा नियमन के हिमायती थे।

गजुभाई- ऐसे हों शक्षक, बाल मंदिर के शक्षकों से। पृ.सं-64

<u>वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गजुभाई के शै क्षक वचारों की उपादेयता</u>

पेशे से एक वकील होते हुए भी गजुभाई ने शक्षा के क्षेत्र में ऐसा कीर्तिमान स्था पत कया क- शक्षा देने का काम शक्षक ही नहीं,अ पतु कोई भी कर सकता है जिसके मन में अपने व्यवसाय के प्रति चाह हो। मूँछों वाली माँ तथा बच्चों के गाँधी के रूप में प्र सद्ध गजुभाई ने शक्षा, पाठ्यचर्या, शक्षण व ध, शक्षक, शक्षार्थी, शक्षालय तथा अनुशासन के संदर्भ में जिस नवाचारी रूप को प्रकट कया, उसका अनुप्रयोग आज की शै क्षक परिस्थितियों के साथ-साथ एक स्वस्थ,स्वच्छ एवं वक सत भारत की संकल्पना के लए भी कया जा सकता है। उनके शै क्षक चंतन को अपनाकर निम्न ल खत क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाये जा सकते हैं-

1. आज के इस भौतिकतावादी युग में बच्चे पैदा होते ही अपना बचपन लैपटाप,मोबाइल एवं टी.वी. में बिताते हैं। यदि इन चीजों से वक्त बचा तो अ भभावक उन्हें आदर्शवादिता का पाठ पढ़ाने लगते हैं। फलतः बच्चों का बचपन,बचपन न रहकर गुड्डे तथा गुड् डयों का खेल बनकर रह जाता है। बचपन में सभी ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मेन्द्रियाँ वकास की अवस्था में होती हैं जिसे आज की इस भौतिकतावादी जिंदगी में स्वछन्द रूप से वक सत होने का अवसर ही नहीं मलता। बचपन में बच्चे दौड़ते, खेलते, भागते थे,जिससे उनका शारीरिक वकास ठीक तरह से होता था। आज बच्चा अपने अ भभावक से खेलने की जिद करता है तो अ भभावक तमाम तरह से बच्चे को डरवा,धमका व फुसलाकर मोबाइल में खेलने की सलाह देते हैं। इन सबका दुःखद परिणाम यह है क बच्चों की ज्ञानेन्द्रियाँ,कर्मेन्द्रियाँ उ चत रूप से वक सत नहीं होती जिससे उनका शारीरिक वकास भी अवरूद्ध हो जाता है। कई बच्चे तो पैदा होने के बाद भी उ चत वकास न होने की वजह से वकलांग हो जाते हैं। अतः गजुभाई की शक्षा को अपनाकर बच्चे का शारीरिक,मान सक एवं ज्ञानेन्द्रिय वकास सही तरीके से कया जा सकता है। अगर शारीरिक वकास ठीक नहीं होगा तो जीवन का कोई भी उद्योग पूरा नहीं हो सकता,क्यों क <u>शरीरद्यं खलुधर्म साधनं।</u> अर्थात् शरीरादि ही सभी धर्मों का साधन है।

2. गजुभाई ने शशुकाल को संस्कार काल माना है तथा इसका स्पष्ट उदाहरण हम अपनी प्राचीन शक्षा प्रणाली,वैदिक एवं बौद्ध आदि में भी पाते हैं। अतः गजुभाई की शक्षा में समाक लत कथा-कहानी के माध्यम से बच्चों में नैतिक व चारित्रिक गुणों का वकास कया जा सकता है,जो आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत है। कर्तव्य बोध का एहसास कराने में गजुभाई की शक्षा आज के समय में मील का पत्थर साबित हो सकती है। पहले के समय में शक्षण कार्य एक प वत्र व सम्मानित पेशा माना जाता था। आज के समय में जबरदस्ती शक्षक तैयार हो रहे हैं। जिसके मुँह से सुनिये वही यह कहते हुए फरता है क बी.एड. व एम.एड. कर लें,यदि स वल सेवा में कहीं नहीं हुआ तो कम से कम शक्षक तो बन ही जाएंगे। आज के शक्षकों के लए उनकी शक्षण पद्धति की शत-प्रतिशत जरूरत है। शक्षकों में अपने व्यवसाय के प्रति लगन खत्म हो गयी है। शक्षक अपने वेतन वृ द्ध एवं सुख-सु वधा के लए तो आन्दोलन छेड़ता है, ले कन इन नौनिहालों, जिसकी वजह से उसका एवं उसके परिवार की रोजी-रोटी चलती है,उसके लए आंदोलन नहीं करता है। उनके द्वारा सुझायी गयी शक्षको चत वृत्ति से स्वस्थ समाज का निर्माण होगा। उन्होंने अपनी पुस्तक ऐसे हो शक्षक में अपने व्यवसाय को वक सत करें,नामक अध्याय में लखते हैं क अभी तक हमने अपनी ताकत और इसका मोल नहीं समझा। हमारा व्यवसाय शारीरिक रोगों का इलाज करना नहीं है, झगडाखोर लोगों के झगडे निबटाना नहीं है, बदमाशों को सजा देकर जेल में डालना नहीं है, अनुशासनहीन नागरिकों को नियंत्रित करके राज्यतंत्र चलाना नहीं है, पर हमारा व्यवसाय रोग न हो, द्वेष-बैर झगडे न हों, बदमाशी की वृत्ति का वनाश हो और व्यवस्था एवं शांति फैले इसका इलाज करने का समूल उपाय तलाशने का है।

3. स्वच्छ तथा स्वस्थ भारत के निर्माण में-

आज के समय में यह एक ज्वलंत समस्या है। शशु शक्षालय तो हैं ही इसकी अगली कड़ी प्राथ मक शाला में भी इसके अलावा बड़े वद्यालयों में भी कूड़े-कचरे का ढेर कैम्पस में पड़ा रहता है। शक्षार्थी जहाँ बैठकर शक्षा ग्रहण करते हैं वह शक्षालय अर्थात् सरस्वती का पावन मंदिर अथवा परिवेश इतना गंदा है तो स्वस्थ वचार कैसे पुष्पित एवं पल्ल वत होंगे। शक्षालय में तो कहीं-कहीं गोबरों की ढेर,सुअरों एवं कुत्तों का वश्रामालय भी देखा जा सकता है। आज हिन्दुस्तान के प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत,स्वस्थ भारत का मशन बनाते हैं। इन सामयिक समस्याओं को गजुभाई ने पौने दो सौ वर्ष पहले ही सुलझाने का सूत्र दे दिया था। शाला का वातावरण यदि ठीक नहीं होगा तो शक्षार्थी की सोंच तथा स्वास्थ्य कैसे अच्छा हो सकता है? गजुभाई अपने शक्षा र्थयों के साथ खेल-खेल में साफ-सफाई का कार्य करवाते हैं।

1. अपरा धक कृत्यों पर अंकुश लगाने में-

अगर यह कहा जाय क आज की शालाएं पाठशालाएं न होकर जेहलखाना बन गयी हैं तो गलत न होगा। शक्षक छात्रों की रू च, योग्यता, क्षमता,रूझान को नहीं समझते न ही उनकी समस्याओं को समझकर दूर करने का प्रयत्न ही करते हैं। गलती करने पर चाहे छोटा शशु हो या बड़ा बच्चा कक्षा से बाहर निकालना अथवा डाँटना इसका समाधान समझा जाता है,इस लए ऐसे बच्चों के मन में असंतोष तथा झोभ पनपता है। गजुभाई की प्रेम पूर्ण शक्षा तथा आनंददायी वातावरण इस तरह की समस्याओं का एक मात्र निदान है।

2. अनुशासनहीनता की समस्या का निदान-

यद्य प हमारा अध्ययन शशु- शक्षा तक ही सी मत है, ले कन गजुभाई की शक्षण पद्धति को अपनाकर प्राथ मक,माध्य मक व उच्च में भी कुछ ज्वलंत समस्याओं का समाधान कया जा सकता है। आज के समय में अनुशासनहीनता एक बड़ी समस्या तथा चुनौती है। नित्यप्रति स्कूलों में होने वाली घटनाएं तथा सामाजिक रिश्तों में आती गरावट इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। गजुभाई कहते हैं क शक्षक को बच्चों का मत्र व पथ-प्रदर्शक का भी रोल निभाना चाहिए। मत्र बनकर उनके अन्तर्मन की बात जानकर मनोवैज्ञानिक तरीके से उसका समाधान कया जा सकता है। उनका मानना था क पटाई-कुटाई इसका समाधान नहीं है। अपने मास्टर लक्ष्मी शंकर के माध्यम से उन्होंने अपने शै क्षक प्रयोगों के दौरान इस तरह की समस्याओं का समाधान प्रेमपूर्ण शक्षा के माध्यम से बताया है।

3. बो झल पाठ्यक्रमों से निजात-

बच्चे पैदा नहीं हुए क उन्हें भारी-भरकम कतावों से भरा बैग उनकी पीठ पर लाद दिया जाता है। शशु की कोमल ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ तथा माँशपे शयाँ अभी वकास की अवस्था में होती हैं,जिसे अभी स्वच्छन्द वक सत होने का मौका मलना चाहिए। आज की इस दोषपूर्ण शक्षा-प्रणाली में सुधार गजुभाई के शै क्षक चंतन से अवश्य मल सकता है।

4. गुणवत्तापूर्ण शक्षा हेतु-

प्राथ मक वद्यालयों में वद्या र्थयों की उपस्थिति, शक्षा की गुणवत्ता को ऊपर उठाने तथा न्यूनतम पोषण स्तर में सुधार के लए सरकार ने मड-डे-मील योजना चलाई, कंतु उसका कोई दीर्घका लक परिणाम सामने नहीं आया। आज भी प्राथ मक स्कूलों में बच्चों की वही पुरानी स्थिति देखने को मलती है। अपव्यय तथा अवरोधन की समस्या आज भी कमोवेश मात्रा में मौजूद है। इसका नि मत्त कारण शाला का अनाकर्षक वातावरण है। जिसका समाधान गजुभाई की शशुशाला से ही कया जा सकता है। जिसमें मास्टर लक्ष्मी शंकर गेट पर खड़े होकर बच्चों को साफ-सुधरी शाला में प्रेम पूर्वक आक र्षत करते हैं। इसी शाला में बच्चे ठहरते हैं, भागते नहीं,जाने का नाम भी नहीं लेते हैं। गजुभाई की शाला के द्वारा बच्चों में स्वंय करके सीखने तथा आपस में भातृ-भावना से रहने व समाज की तमाम ज्वलंत समस्याओं का समाधान, कया

जा सकता है। पर्यावरण के प्रति जन-जागरण तथा सामाजिक समस्याओं का निदान शशु शक्षा-प्रणाली ही है। सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुँचाने का काम भी इस शक्षा प्रणाली के माध्यम से संभव है।

5. कौशलो का वकास-

गजुभाई ने करके सीखने की व धयों पर जोर देते हुए कहा क इससे न सर्फ शशुओं में ठत्सुकता जाग्रत होती है,अ पतु प्रयास व त्रुटि द्वारा बच्चा सीखने में सफल होता है। यह सीखना स्थायी तथा कौशलो चत होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पाण्डेय डा. राम शकल शक्षा के सद्धान्त, अग्रवाल पब्लिकेशन्स 28/115 ज्योति ब्लाक, संजय प्लेस आगरा-2

चौबे डा. सरयू प्रसाद एण्ड अ खलेश भवदीय प्रकाशन, श्रृंगार हाट, अयोध्या फैजाबाद।

रमेश दबे गजुभाई बधेका कै शै क्षक वचार एवं प्रयोग, रा0अ0 श0प0, नई दिल्ली

ऐसे हो शक्षक गजुभाई बधेका संस्कृति साहित्य

गजुभाई-मांटेसरी पद्धति भाग-2, माण्टेसरी बाल शक्षण स मति राजलदेसर(चुरू)

गजुभाई- मांटेसरी पद्धति भाग-2, मांटेसरी बाल शक्षण स मति राजलदेसर(चुरू)

गजुभाई- प्राथ मक शाला में शक्षा पद्धतियाँ

मांटेसरी बाल शक्षण स मति राजलदेसर(चुरू)

गजुभाई- दिवास्वप्न, मांटेसरी बाल शक्षण स मति, राजलदेसर(चुरू)

गजुभाई- प्राथ मक शाला में भाषा- शक्षा, मांटेसरी बाल शक्षण स मति, राजलदेसर (चुरू)

गजुभाई- कथा कहानी का शास्त्र, मांटेसरी बाल शक्षण स मति राजलदेसर(चुरू)